श्री सुपार्श्वनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री सुपार्श्वनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.-9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सुपार्श्वनाथ विधान

जय बोलिये
संसार में सबसे सुंदर,
सर्वश्रेष्ठ शिष्ट निरम्बर,
सर्वोच्च पूज्य दिगम्बर,
निजात्मलीन चिदम्बर,
त्यागी तुष्ट निर्मोही,
भक्तों के मनमोही,
परमपूज्य
श्री सुपार्श्वनाथ भगवान् की जय॥

भजन

(लय : कुण्डलपुर की धूल....)

अपने संकट कर्म सब नशाने आये हैं।[2]
सुपार्श्वप्रभु को माथा हम झुकाने आये हैं॥[2]

1.

दुनियाँ का हर भोग डँसता है साँप जैसा।[2]
कोई द्वार आज तक, मिला नहीं आप जैसा॥[2]
अब पापों की होली हम जलाने आये हैं।[2]
सुपार्श्वप्रभु को माथा हम झुकाने आये हैं॥[2]

2.

जिसके दिल में आप नहीं उस सा है गरीब नहीं।[2]
जिसको तेरा दर्श मिले उस सा है अमीर नहीं॥[2]
अपने जिन से निज का धन जुटाने आये हैं।[2]
सुपार्श्वप्रभु को माथा हम झुकाने आये हैं॥[2]

3.

हमने जिसको अपना माना उससे ही दुख पाये क्यों।[2]
फिर भी उससे राग किया जान नहीं पाये क्यों॥[2]
वैरागी से राग अब रचाने आये हैं।[2]
सुपार्श्वप्रभु को माथा हम झुकाने आये हैं॥[2]

4.

प्रभु से जो राग होता वही तो वैराग्य होता।[2]
जिसने तेरा नाम जपा वही धन्य भाग्य होता॥[2]
'सुव्रत' सोया भाग्य अब जगाने आये हैं।[2]
सुपार्श्वप्रभु को माथा हम झुकाने आये हैं॥[2]

श्री सुपार्श्वनाथ विधान

स्थापना (दोहा)

जिनवरनाथ सुपार्श्वजी, सप्तम सुन्दरदेव।
दर्शन पूजन को झुके, भक्तशीश स्वयमेव॥

(शार्दूलविक्रीडित) (लय : मङ्गलाष्टक)

अर्हंतेश सुपार्श्वनाथ भगवन्, तीर्थेश स्वामी तुम्हीं।
हो सिद्धालय मोक्षरूप जग में, श्रद्धा सुधा हो तुम्हीं॥
सारा ये जग आपसे तर रहा, दे दो सहारा हमें।
भक्तों की बस नाँव पार कर दो, सो ही पुकारा तुम्हें॥

होगी पार न नाँव तो फिर सुनो, होगी तुम्हारी हँसी।
चाहो आप न आप पै जग हँसे, तो तार दो शीघ्र ही॥
आस्था रोज पुकारती प्रभु तुम्हें, जल्दी सुनो प्रार्थना।
श्रद्धा मंदिर में निवास कर लो, प्रारम्भ हो अर्चना॥

(सोरठा)

प्रभु सुपार्श्व जिनराज, आतम कली खिलाइये।
निज सम हमको आज, सुन्दर रूप दिलाइये॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं.....)

जाना है जिनको सदैव अपना, माना उन्हीं को सगा।
सारे संकट रोग कष्ट दुख भी, पाये उन्हीं से दगा॥
ऐसा ही हम राग रोग तजने, ले नीर सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोस्तू करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं.....।

जो सांसारिक द्रव्य नश्वर रहे, देते सभी ताप वो।
प्राणीमात्र तपें जलें दुख सहें, त्यागें नहीं पाप को॥
ये वैभाविक भाव त्याग करने, ले गंध सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोस्तू करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

अज्ञानी हम तो रहे क्षय हुआ, खोदा कुआ स्वार्थ का।
पूरा जो कब है भरा कपट से, घोंटा गला आत्म का॥
दे दो आश्रय भक्त को, चरण का ले पुंज सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोस्तू करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

पाता जो कुछ भोग का विषय वो, भाता हमें है नहीं।
भाता जो कुछ भोग का विषय वो, पाता कभी भी नहीं॥
ये इच्छा जल को मिले तप सुधा, ले पुष्प सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोस्तू करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

बीता काल अनंत रोग तन को, वो भूख ही मारती।
आत्मा की सुध हो गयी अब जिसे, वो ही उसे तारती॥
आत्मा को चखने सभी भगत ले, नैवेद्य सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोस्तू करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

दीये भूपर सूर्य चाँद नभ में, तारे करें आरती।
ये अज्ञान निशा नहीं हर सकें, जानें नहीं भारती॥
पायें ज्योति अनंतज्ञान हम भी, ले दीप सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोस्तू करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

पापों की जड़ दौड़-धूप करके, बाँधे सदा गाठरी।
है विश्वास न दीप धूप फल पै, जो पुण्य की दे झड़ी॥

कर्मों का वन दग्ध हो चित खिले, ले धूप सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोस्तू करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

रंगीले फल विश्व के हम तजें, जो पुण्य के पाप के।
आत्मा की निज स्वानुभूतिफल को, कैसे चखें ओ! सखे॥
वो हों प्राप्त हमें, तभी फल भरी, ले थाल सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोस्तू करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

है विश्वास हमें जिनेन्द्र तुम पै, पूजा इसी से करें।
गायेंगे हम आपके भजन भी, गाथा इसी से करें॥
पायेंगे हम छाँव भी चरण की, आस्था हमारी यही।
आयेंगे हम मोक्ष के महल में, श्रद्धा हमारी यही॥

आशीर्वाद हमें यही बस मिले, छूटे न पूजा कभी।
दो आशीष हमें यही बस प्रभो!, टूटे न आस्था कभी॥
ऐसी छाँव कृपा करो बस विभो!, अक्षय्य श्रद्धा करें।
आत्मा शाश्वत भेंट अर्घ्य बन सके, विश्राम यात्रा करें॥

(दोहा)

सुपार्श्वप्रभु की विश्व में, लीला अपरम्पार।
पूजक बन के पूज्य फिर, चलें मोक्ष के द्वार॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

भाद्र शुक्ल छठ को तजे, मध्यम पद अहमिन्द्र।
पृथ्वी माँ के गर्भ में, वसे सुपार्श्व जिनेन्द्र॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ज्येष्ठ शुक्ल बारस हुई, झूम-झूम विख्यात।
सुप्रतिष्ठ घर आँगने, जन्मे सुपार्श्वनाथ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

बारस शुक्ला ज्येष्ठ में, तजे-मोह संसार।
प्रभु सुपार्श्व मुनि बन गये, गूँजे जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

षष्ठी फाल्गुन कृष्ण में, लोकालोक दिखाए।
सुर-नर नाथ सुपार्श्व को, सादर शीश नवाए॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सातें फागुन कृष्ण में, प्रभु सुपार्श्व गए मोक्ष।
गिरिवर प्रभास कूटमय, हम तो देते धोक॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

(दोहा)

आत्म शक्ति की व्यक्ति को, करें भक्ति हम लोग।
सुपार्श्वप्रभु के गीत गा, बने मुक्ति के योग॥

(ज्ञानोदय)

सुपार्श्वनाथ जिनराज आप हो, सुखसागर सुखअंबर हो।
सुख के सूरज, चाँद सितारे, सुख के बादल भूधर हो॥
सुख की धरती सुख की वर्षा, तुम हो सुख की हरियाली।
सुखदाता सुख पुंज तुम्हीं हो, सुख की होली दीवाली॥1॥

सुख के रत्न खजाने तुम हो, सुख के तुम ही धाम रहे।
सुखानंद तुम सुख शाश्वत हो, वीतराग विज्ञान रहे॥
तुम हो सुखिया हम तो दुखिया, कैसे तुमको पायें हम।
इसीलिए तो दर्शन करके, पूजा-पाठ रचायें हम॥ 2॥

राज्य क्षेमपुर का इक राजा, नंदिषेण जो राज्य करे।
धर्म अर्थ अरु काम पुण्य से, बुद्धि पराक्रम प्राप्त करे॥
मोक्षमार्ग पर चलकर निज पर, जय करना उसकी इच्छा।

अतः पुत्र को राज्य दानकर, उसने ले ली मुनिदीक्षा॥3॥

तीर्थंकर पद कर्म बाँधकर, सल्लेखन कर सुर पाये।
मध्यम ग्रैवेयक की आयु, भोगी फिर भू पर आये॥
नगर बनारस में फिर जन्मे, जिनका नाम सुपार्श्व पड़ा।
जिनकी सेवा में जग वैभव, तव चरणों में आन खड़ा॥4॥
राज्य प्राप्त कर आठ तरह के, सुख पाये थे स्पर्शन के।
पाँच तरह के रसना वाले, नासा नयन कर्ण मन के॥
पंचेन्द्रिय विषयों को पाकर, आत्म नियंत्रण ना छोड़ा।
जब देखा था ऋतु परिवर्तन, तब मुनि बनने मन मोड़ा॥5॥

लौकान्तिक सुर गुण गाये तब, बैठ मनोगति शिविका में।
पहुँच सहेतुक वन में प्रभु ने, जिनदीक्षा ली संध्या में॥
साथ एक हजार राजा थे, बेला का था नियम लिया।
अगले दिन महेन्द्रदत्त ने, पड़गाहन कर दान दिया॥ 6॥

नौ वर्षी छद्मस्थ बिताये, फिर बेलामय ध्यान लगा।
गर्भ तिथी में गर्व हमें है, केवलज्ञानी हुए अहा॥
ज्ञानोत्सव फिर समवसरण में, जिन-बगिया के फूल झड़े।
जिसकी माला से भक्तों के, बंधन कर्म समूल झड़े॥ 7॥

विहार रुचा न तो विहार तज, लोक शिखर पाने मचले।
मासिक योग निरोध धारकर, सम्मेदाचल धाम चले॥
प्रभास कूट से कर्म हटाकर, प्रभु ने महा प्रयाण किया।
सूर्योदय में तब इन्द्रों ने, महा मोक्ष कल्याण किया॥ 8॥

नाथ! आपने पापशत्रु को, बुद्धि-कला से मौन किया।
और बाद में मौन धारकर, करके युद्ध परास्त किया॥
समवसरण फिर मोक्षधाम पा, जैन धरम का मान रखा।
हम नजदीक आपके आयें, हमने यह अरमान रखा॥ 9॥

जीव तत्त्व यह शुद्ध करा दो, अजीव हम से दूर करो।
हरलो आस्रव बंध द्वन्द्व सब, कर्म निर्जरा पूर्ण करो॥
द्रव्य भाव नौ कर्म नशा दो, भक्तों को मत ठुकराओ।
शब्द छन्द पर ध्यान न देकर, करुणा कर अब अपनाओ॥10॥

पास न अपने बुला सको तो, इतनी कृपा अवश्य करो।
आँखों से ना ओझल होना, सदा मनालय वास करो॥
श्वाँस-श्वाँस धड़कन-धड़कन से, दूर करो विभाव बदबू।
'सुव्रत' 'विद्या' के निजघट में, भर दो जिन-श्रद्धा खुशबू॥

(सोरठा)

सुपार्श्वप्रभु दुखहार,जग को सुख के धाम हो।
क्या गायें गुणमाल, बारम्बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

सुपार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, सुपार्श्वनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(हरिगीतिका)

जिनवर सुपारसनाथ हम पर भी दया अब कीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥

(सप्त व्यसन त्याग वर्णन)

जो भी बिना पुरुषार्थ करके, धन कमाना चाहते।
वो ही जुआ लत लाटरी से वित्त इज्जत नाशते॥
पाण्डव समान बने न जग सो, ये व्यसन हर लीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 1॥

ॐ ह्रीं द्यूतव्यसन अवगुणविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो यज्ञ भूमि पेट अपना कब्रभूमि बना रहे।
जो मांस खाके पेट भरते, धर्म जन्म गवाँ रहे॥
बक नृप समान बने न जग सो, ये व्यसन हर लीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 2॥

ॐ ह्रीं मांसव्यसन अवगुणविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो धर्म पैसा स्वास्थ्य इज्जत, सब खराब करा रहे।
फिर भी नशा नहिं तज सके तो, शुभ शराब बता रहे॥
जग द्वारिका सा ना जले सो, ये व्यसन हर लीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 3॥

ॐ ह्रीं मद्यव्यसन अवगुणविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो दूसरों का धन हड़प अपनी तिजोरी भर रहे।
वो प्राणियों का दिल दुखा के पाप चोरी कर रहे॥
शिवभूत ब्राह्मण जग न हो सो, ये व्यसन हर लीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥4॥

ॐ ह्रीं स्तेयव्यसन अवगुणविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

निर्दोष जीवों को सताकर, शौक अपना जो करें।
बनके शिकारी धर्म नाशें, तज दया हिंसा करें॥
जग ब्रह्मदत्त यथा न हो सो, ये व्यसन हर लीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 5॥

ॐ ह्रीं शिकारव्यसन अवगुणविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो नारि तन-व्यापार करके, शील धर्म नशाएगी।
सम्बन्ध उनसे जो रखे तो, लाज उसकी जायेगी॥
जग चारुदत्त यथा न हो, वेश्यागमन हर लीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 6॥

ॐ ह्रीं वेश्यागमनव्यसन अवगुणविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो अन्य जन की नारियों पर डालता नजरें बुरी।
हो हाल रावण सा उसी का, मारता खुद पर छुरी॥

दुनियाँ न रावण सी बने सो, ये व्यसन हर लीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 7॥

ॐ ह्रीं परस्त्रीव्यसन अवगुणविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(सप्त तत्त्व वर्णन)

हम जीव समझें और जाने, शुद्ध करके पा सकें।
यह हो सके सम्भव प्रभु जो, आपके गुण गा सकें॥
शुद्धात्म तुम सम पा सकें, ऐसी दया अब कीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 8॥

ॐ ह्रीं निजशुद्धजीवतत्त्वप्राप्तये श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो तत्त्व पुद्गल जड़ अचेतन वो अजीव कहा रहा।
वह जीव से ज्यों ही मिले त्यों, कर्म कष्ट दिला रहा॥
हो जीव से पुद्गल जुदा, ऐसी दया कर दीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 9॥

ॐ ह्रीं अजीवतत्त्वपृथक्कर्त्ता श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिससे शुभाशुभ कर्म आते, है वही आस्रव कहा।
वह ही हमें संसार दुख दे, ज्ञानियों ने वह तजा॥
हम भी निरास्रव बन सकें, ऐसी दया कर दीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 10॥

ॐ ह्रीं संपूर्ण आस्रवतत्त्वविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

इस जीव से मिलना करम का, बंध तत्त्व कहा गया।
यह बंध जग दुख-द्वन्द्व दे सो, यत्न कर छोड़ा गया॥
निर्बन्ध हम निर्ग्रन्थ हों, ऐसी दया कर दीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 11॥

ॐ ह्रीं सम्पूर्णबन्धतत्त्वविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो रोकता है कर्म आना, तत्त्व संवर जान लो।
दो भेद का हर कर्म रोके, अटल श्रद्धा मान लो॥

सम्पूर्ण संवर हम करें, ऐसी दया कर दीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 12॥

ॐ ह्रीं सम्पूर्णसंवरतत्त्वप्राप्तये श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जब कर्म आंशिक झड़ रहे तो निर्जरा शुभ तत्त्व वो।
नित मोक्ष राही चाहता दो-दो धरे वह भेद को॥
हो निर्जरा सब कर्म की, ऐसी दया कर दीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 13॥

ॐ ह्रीं सम्पूर्णनिर्जरातत्त्वप्राप्तये श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जब निर्जरा सम्पूर्ण हो तो, तत्त्व वो ही मोक्ष है।
सारे मुमुक्षू सज्जनों को, प्राप्त करना लक्ष्य है॥
हम मोक्ष पायें शीघ्र प्रभु, ऐसी दया कर दीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 14॥

ॐ ह्रीं मोक्षतत्त्वप्राप्तये श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(सप्त भय वर्णन)

हो इस जगत् में क्या हमारा, भय इसी से ग्रस्त जो।
इहलोक भय इसको कहा, ज्ञानी इसी से मुक्त हो॥
हम मुक्त हो इससे तुरत, ऐसी दया कर दीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 15॥

ॐ ह्रीं इहलोकभयविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

क्या मृत्यु के उपरान्त होगा, नरक हो या स्वर्ग हो।
परलोक भय ज्ञानी तजे, चैतन्य में अनुरक्त हो॥
परलोक भय हम हर सकें, ऐसी दया कर कीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 16॥

ॐ ह्रीं परलोकभयविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सुख में सुखी दुख में दुखी जो हो वही बाहरमुखी।
आकुल निराकुल भाव की, दुर्वेदना करती दुखी॥

हम वेदना भय हर सकें, ऐसी दया कर दीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 17॥

ॐ ह्रीं वेदनाभयविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सत्ता हमारी नश न जाये, हो सुरक्षित ज्ञान भी।
ऐसी अरक्षा से डरे जो, वह रहा अज्ञान ही॥
हम भय अरक्षा का हरें, ऐसी दया कर दीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 18॥

ॐ ह्रीं अरक्षाभयविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिसमें प्रवेश न हो किसी का, नाम उसका गुप्ति जय।
जो है खुला भय का जनक, तो कष्टदान अगुप्ति भय॥
हम भय अगुप्ति का हरें, ऐसी दया कर दीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 19॥

ॐ ह्रीं अगुप्तिभयविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सम्पूर्ण प्राणों का निकलना, देह का ही है मरण।
ज्ञानी कहें आतम हमारी, है शरण कैसा मरण॥
हम भी मरण का भय हरें, ऐसी दया कर दीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 20॥

ॐ ह्रीं मरणभयविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कुछ भी नहीं आश्चर्य जग में, भेद के विज्ञान में।
लेकिन अचानक क्यों डरें, हम मूढ़मत अज्ञान में॥
भय दूर आकस्मिक करें, ऐसी दया कर दीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 21॥

ॐ ह्रीं आकस्मिकभयविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो राग आग विभाव दहके, तत्त्व को झुलसा रहा।
संसार को निज चक्र में वह, राग ही उलझा रहा॥
वैराग्य पायें राग तज, ऐसी दया कर दीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 22॥

ॐ ह्रीं रागभावविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

है द्वेष की पीड़ा भयंकर, नित करे बेचैन जो।
जिसने यहाँ न विभाव जीता है कहाँ जिन-जैन वो॥
समता मिले जय द्वेष हो ऐसी दया कर दीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को आशीष अपना दीजिए॥ 23॥

ॐ ह्रीं द्वेषभावविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिस मोह ने गाफिल किया डेरा जमाकर विश्व को।
वह मोह जय उसने किया जो तत्त्व समझे शिष्य हो॥
शिष्यत्व का जय मोह हो ऐसी दया कर दीजिए।
नत शिष्य के इस शीश को, आशीष अपना दीजिए॥ 24॥

ॐ ह्रीं मोहभावविनाशनसमर्थ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

(ज्ञानोदय)

अस्त हो रहे भक्त जगत् ने, तुमको आज पुकारा है।
हमको दे दो नाथ सहारा, तुम बिन कौन हमारा है॥
नाँव हमारी क्यों ना थामी, बीच भँवर में क्यों छोड़ा।
भूल हुई क्या हमसे भगवन्, हमसे क्यों मुख भी मोड़ा॥

या तो हमको पूर्ण डुबा दो, या फिर नैया पार करो।
या तो हमसे नाता तोड़ो, या जल्दी उद्धार करो॥
हमको आप डुबा नहिं सकते, अतः शीघ्र उद्धार करो।
अर्घ रूप में भक्त भावना, नमो नमो स्वीकार करो॥

(दोहा)

सुपार्श्वप्रभु के द्वार का, देखा अद्भुत नाम।
अतः विनय से हम करें, सादर नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

जाप्यमन्त्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

आस्था से आराध्य का, हम भी करते ध्यान।
सुपार्श्व प्रभु का इसलिए, अब करते गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

सारी दुनियाँ घूम चुके हम, जगह-जगह भी छान चुके।
नाथ! आप सम कोई न दूजा, ऐसा हम पहचान चुके॥
सुन्दरता की अद्भुत मूरत, चमत्कार आकर्षण है।
अतः भक्ति से खिचे आए हम, नमस्कार भी क्षण-क्षण है॥ 1॥

एक चेतना को ना पाया, समझे मुक्त न संसारी।
रत्नत्रय को धार सके ना, चउ आराधन ना धारी॥
पंच पाप में लीन रहे पर, पंच परमपद ध्या न सके।
षट्-कायों की हिंसा की पर, षट्-आवश्यक पा न सके॥ 2॥

सात व्यसन में सात भयों में, सात नरक में हम उलझे।
सात तत्त्व को समझ सके ना, सात भंग भी ना सुलझे॥
सात भयों से डर-डरकर हम, आठ कर्म को हर न सके।
आठ मूलगुण धार सके ना, अष्टम वसुधा पा न सके॥ 3॥

नवमल द्वारों में फँस करके, नौ पदार्थ को लख न सके।
नव देवों को पूज सके ना, नो-कर्मों से बच न सके॥
दस प्राणों को त्याग सके ना, सम्यग्दर्शन दस न धरे।
दस धर्मों को पाल सके ना, कैसे हो कल्याण अरे॥ 4॥

हो कल्याण सभी का स्वामी, ऐसा भाव हमारा है।
तभी आपके गुणगाने को, खोजा द्वार तुम्हारा है॥
चरणों में हम करें प्रार्थना, अर्घ चढ़ायें हाथों से।
क्या? मंतव्य हमारा है प्रभु, कह न सकें हम बातों से॥ 5॥

फिर भी कर गुणगान आपका, हमें बहुत उल्लास हुआ।
रागद्वेष कुछ नाश हुआ है, सम्यक् ज्ञान प्रकाश हुआ॥
स्वाभाविक जिनरूप झलकता, मिथ्या चक्र उदास हुआ।
विकसित आत्मिक भक्ति हुई है, धन्य! धन्य! जिनदास हुआ॥6॥

वैभाविक जो कर्म-आवरण, भक्तातम के क्षीण करो।
विषयासक्ती माया ममता, जग-आकर्षण शीर्ण करो॥
आतम परमातम का अन्तर, हे सुपार्श्वप्रभु! जीर्ण करो।
भक्तों की लो खूब परीक्षा, पर जल्दी उत्तीर्ण करो॥ 7॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित की, अंतरमुखी भरो गंगा।
जिससे भक्तों का यह आतम, हो शुद्धातम हो चंगा॥
चरण शरण जिनभक्ति सदा हो, जिससे साँचे भक्त बनें।
फिर 'सुव्रत' प्रभु की करुणा से, शुद्ध बने, फिर मुक्त बनें॥ 8॥

(दोहा)

नाथ! आपके पुण्य से, जागा अपना पुण्य।
दर्श मिला सान्निध्य तो, गुण गायें हों धन्य॥
अल्प बुद्धि हम क्या कहें, हे प्रभु! तव बड़भाग्य।
थोड़ा भी जो छू लिया, वही भक्त सौभाग्य॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

सुपार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, सुपार्श्वनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति सुपार्श्वनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

रहे मूलनायक जहाँ, पार्श्वनाथ भगवान्।
पूर्ण 'बबीना' में हुआ, सुपार्श्वनाथ विधान॥
दो हजार तेरह सितम्बर रवि दिन, उन्नीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : रंगमा-रंगमा.....)

आरती.... आरती..... आरती.... रे।
प्रभु तेरी उतारें, हम आरती...रे॥

सुपार्श्व प्रभुजी जिनवर हमारे[2],
जिनवर हमारे स्वामी जिनवर हमारे[2]
मोक्षमहल के सारथी रे-सारथी रे॥ प्रभु तेरी उतारें....॥ 1॥

सुप्रतिष्ठ राजा पृथ्वी के नंदा[2],
पृथ्वी के नंदा-स्वामी, पृथ्वी के नंदा[2],
दुनियाँ तुम्हीं को निहारती रे-निहारती रे॥ प्रभु तेरी उतारें....॥ 2॥

जिसने भी पायी कृपा तुम्हारी[2],
कृपा तुम्हारी स्वामी कृपा तुम्हारी[2]
उसको तो मुक्ति पुकारती रे-पुकारती रे॥ प्रभु तेरी उतारें....॥ 3॥

हमको भी तारो जल्दी निहारो[2],
जल्दी निहारो, स्वामी जल्दी निहारो[2]
शरणा तुम्हारी तो तारती रे - तारती रे॥ प्रभु तेरी उतारें....॥ 4॥

'सुव्रत' को जिनवर तुम न भुलाना[2],
तुम न भुलाना, स्वामी तुम न भुलाना[2]।
भक्तों को दूरी अब मारती रे - मारती रे॥ प्रभु तेरी उतारें....॥ 5॥